BA Part I

Paper - II

राष्ट्रीय आय की परिभाषा
(Definition of National Income)

राष्ट्रीय आय की मुख्यतः तीन परिभाषाएँ दी जाती है :- (1) मार्शल की परिभाषा (2) पीगू की परिभाषा (3) फिशर की परिभाषा।

(1) मार्शल की परिभाषा (Definition of Marshall) :- प्रो० मार्शल के अनुसार 'किसी देश का श्रम एवं पूँजी उसके प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील होकर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं का एक समूह उत्पादन करते है जिसमे सभी प्रकार की सेवाएँ सम्मिलित रहती है। यह देश की वास्तविक विशुद्ध वार्षिक आय या राष्ट्रीय लाभांश है।" (The labour and capital of country acting on its natural resources produce annually a certain net aggregate of commodities material and immaterial including services of all kinds. This is true annual income or revenue of the country or the national dividend.

प्रो० मार्शल के अनुसार राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत हम उन सभी वस्तुओं और सेवाओं को लेते है जिनका उत्पादन एक साल के अन्तर्गत पूँजी एवं श्रम प्राकृतिक साधनों के सहयोग से करते है लेकिन राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत कुल उत्पादन (Gross Product) को न रखकर केवल शुद्ध उत्पादन (Net Product) को रखा जाता है। यदि देश की पूँजी विदेशों में लगायी गई है तो उससे प्राप्त आय को भी राष्ट्रीय आय मे जोड़ दिया जाता है।

(2) पीगू की परिभाषा (Definition of Pigou) :- प्रो० पीगू के अनुसार "राष्ट्रीय लाभांश किसी समाज की वस्तुनिष्ठ अथवा भौतिक आय का वह भाग है जिसमे विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित होती है, जिसकी मुद्रा के रूप मे माप हो सकती है।" (National Dividend is that part of the objective income of the community, including of course income derived from abroad which can be measured in money)"

प्रो० पीगू ने राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत केवल उन्ही वस्तुओं और सेवाओं को लिया है जिनकी माप मुद्रा के रूप मे की जा सकती है। जिन वस्तुओं तथा सेवाओं की माप मुद्रा के रूप मे नही हो सकती उन्हें राष्ट्रीय आय मे सम्मिलित नही किया जाता। इसे स्पष्ट करने के लिए प्रो० पीगू ने एक उदाहरण दिया है। मानलिया जाय कि एक व्यक्ति

अपने यहाँ नौकरानी को वेतन पर रखता है तो नौकरानी का वह वेतन राष्ट्रीय आय में सम्मिलित किया जाएगा। लेकिन यदि वह नौकरानी से शादी कर ले तो नौकरानी की सेवा की गणना अब राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नहीं की जायगी क्योंकि अब उस व्यक्ति को नौकरानी के लिए वेतन नहीं देना पड़ेगा अर्थात् नौकरानी की सेवा मुद्रा से नहीं मापी जायेगी। स्पष्ट है कि जहाँ मार्शल की परिभाषा व्यापक है वहाँ प्रो० पीगू की परिभाषा संकीर्ण है क्योंकि इसके अनुसार राष्ट्रीय आय में केवल उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं को लिया जाता है जिनकी माप मुद्रा के रूप में की जा सकती है। फिर भी प्रो० पीगू की परिभाषा की मुख्य विशेषता यह है कि मुद्रा रूपी मापदण्ड का जिक्र करके प्रो० पीगू ने राष्ट्रीय आय के सिद्धान्त में संनिष्ठता ला दी है जिससे राष्ट्रीय आय को मापना आसान हो जाता है।

(3) फिशर की परिभाषा (Definition of Fisher) :- प्रो० फिशर के अनुसार "वास्तविक राष्ट्रीय आय वार्षिक शुद्ध उत्पादन का वह भाग है जिसका उस वर्ष अन्तर्गत प्रत्यक्ष रूप से उपभोग किया जाता है" (The true National Income is that part of annual net produce which is directly consumed during that year)" प्रो० फिशर ने वार्षिक उपभोग को राष्ट्रीय आय का मापदण्ड माना है जबकि प्रो० मार्शल ने शुद्ध वार्षिक उत्पादन को राष्ट्रीय आय का मापदण्ड माना है। इस विभिन्नता को हम एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मान लिया जाय कि एक मकान का निर्माण 20 हजार रुपये में होता है और उसकी आयु 20 साल है तो ऐसी अवस्था में प्रो० फिशर के अनुसार राष्ट्रीय आय में मकान के मूल्य के केवल उसी हिस्से की गणना की जायेगी जिसका उपयोग एक साल में होगा अर्थात् राष्ट्रीय आय में केवल 1 हजार रुपये सम्मिलित किये जायेंगे। लेकिन प्रो० मार्शल के अनुसार राष्ट्रीय आय में 20 हजार रुपये की गणना होगी। प्रो० फिशर का विचार है कि उत्पादित वस्तुओं में कुछ पूँजीगत वस्तुएँ (capital goods) होती हैं। अतः उनका वही हिस्सा राष्ट्रीय आय में गिना जाना चाहिए जो एक साल के अन्दर उपभोग किया जाय।

Scanned with CamScanner